वीर हिरानी के डेब्यू पर भावुक हुए अरशद वारसी

फिल्म अभिनेता अरशद वारसी ने अपकमिंग वेब सीरीज 'प्रीतम एंड पेड्रो' से अभिनय की शुरुआत कर रहे वीर हिरानी की जमकर तारीफ की है।अरशद वारसी ने कहा कि वीर न केवल एक प्रतिभाशाली कलाकार हैं, बल्कि एक बेहद अच्छे इंसान भी हैं और उनके अंदर सफल अभिनेता बनने के सभी गुण मौजूद हैं।

अरशद वारसी ने कहा कि उन्होंने वीर को बचपन से बड़ा होते देखा है और अब उनके साथ स्क्रीन साझा करना उनके लिए बेहद भावुक और खास अनुभव है. उन्होंने कहा, वीर जैसा इंसान है, उसकी वजह से लोग उसे बार-बार अपनी फिल्मों में लेना चाहेंगे. वह बिना किसी नखरे वाला और मेहनती कलाकार है. जब भी उसे मेरी जरूरत होगी, मैं हमेशा उसके साथ खड़ा रहूंगा.

अरशद ने कहा कि वीर की सफलता की वह दिल से कामना करते हैं. अरशद ने कहा, मैं बहुत खुश हूं कि उसका पहला बड़ा प्रोजेक्ट मेरे साथ है. वीर मेरे लिए बेटे जैसा है. बचपन में वह मेरे साथ फोटो खिंचवाने आया था और आज हम साथ काम कर रहे हैं. यह मेरे लिए बेहद खूबसूरत एहसास है. अरशद ने वीर की परवरिश और स्वभाव की भी सराहना करते हुए कहा कि वह सभी की बात सुनने वाला और कड़ी मेहनत करने वाला कलाकार है. उन्होंने कहा कि पहली ही परियोजना में वीर ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है.

सोनी पल पर लौटेगी रामानंद सागर की रामायण

रामानंद सागर की कालजयी पौराणिक धारावाहिक 'रामायण' का प्रसारण छह जुलाई से सोनी पल पर किया जाएगा.वर्ष 1987 में पहली बार प्रसारित 'रामायण' भारतीय टेलीविजन के सबसे लोकप्रिय धारावाहिकों में शामिल रही है. 78 एपिसोड की इस गाथा ने करोड़ों दर्शकों को अपनी आस्था, संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों से जोड़ने का काम किया था.

सोनी पल ने हनुमान और 'यशोमती मैया' जैसे धार्मिक कार्यक्रमों के बाद अब अपनी आध्यात्मिक प्रस्तुतियों की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए 'रामायण' को प्रसारित करने का निर्णय लिया है. भगवान श्रीराम के जीवन पर आधारित यह धारावाहिक मर्यादा, त्याग, करुणा, साहस और कर्तव्य के मूल्यों को दर्शाता है. माता सीता, लक्ष्मण और हनुमान के साथ उनकी प्रेरणादायक यात्रा आज भी दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती है. सोनी पल के प्रवक्ता ने कहा कि 'रामायण' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि भारत की सामूहिक स्मृतियों और आस्था का अभिन्न हिस्सा है. यह गाथा आज भी लोगों को जोड़ने और प्रेरित करने की क्षमता रखती है. उन्होंने कहा कि इसके प्रसारण के माध्यम से चैनल अर्थपूर्ण और पारिवारिक मनोरंजन उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत कर रहा है.

फीस छोड़ अक्षय ने जीता सभी का दिल

वेलकम टू द जंगल में अक्षय ने नि:शुल्क काम किया

निर्देशक अहमद खान की फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' अपने भव्य बजट, बड़ी स्टार कास्ट और अक्षय कुमार के अनोखे पारिश्रमिक मॉडल को लेकर चर्चा में है. ट्रेड अनुमानों के अनुसार फिल्म का कुल बजट करीब 125 करोड़ रुपये है.

फिल्म के बजट का सबसे बड़ा हिस्सा शूटिंग पर खर्च किया गया. अकेले प्रोडक्शन कॉस्ट लगभग 60 करोड़ रुपये रही. विशाल स्टार कास्ट और एक्शन सीक्वेंस को देखते हुए यह बजट भव्यता और संतुलित खर्च का उदाहरण माना जा रहा है. फिल्म की सबसे खास बात यह है कि अक्षय कुमार ने इस बार अपनी अभिनय फीस नहीं ली. इसके बजाय उन्होंने निर्माता के साथ मुनाफे में हिस्सेदारी के आधार पर काम करने का फैसला किया. इस व्यवस्था के तहत निर्माता अपनी लागत निकालने के बाद जो मुनाफा कमाएंगे, उसमें से अक्षय कुमार को उनका हिस्सा मिलेगा. फिल्म की पूरी स्टार कास्ट पर लगभग 35 करोड़ रुपये खर्च किए गए, जो इतनी बड़ी कलाकारों की टीम वाली फिल्म के हिसाब से अपेक्षाकृत कम माना जा रहा है. इसकी प्रमुख वजह अक्षय कुमार द्वारा अपनी फीस छोड़ना रही. वहीं, निर्देशक और तकनीकी टीम की फीस पर लगभग 15 करोड़ तथा प्रिंट और प्रचार-प्रसार पर भी करीब 15 करोड़ रुपये खर्च किए गए. इस तरह फिल्म की कुल निर्माण लागत 125 करोड़ रुपये तक पहुंची. अहमद खान के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी, दिशा पाटनी, जैकलीन फर्नांडिस, अरशद वारसी, जैकी श्रॉफ, परेश रावल, रवीना टंडन आदि प्रमुख भूमिकाओं में हैं.

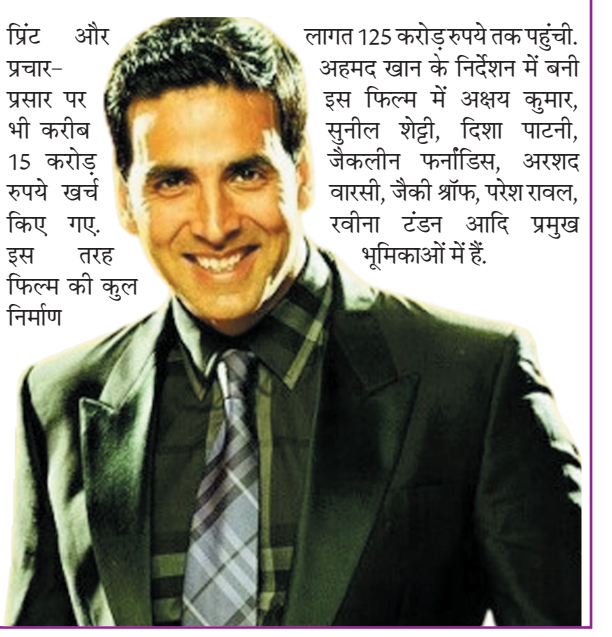

शाहरुख को देख काजोल ने किया मजेदार कमेंट

शाहरुख खान और काजोल की जोड़ी आज भी बॉलीवुड की सबसे आइकॉनिक जोड़ियों में गिनी जाती है. दोनों ने साथ में जितनी भी फिल्में कीं, उनमें से अधिकांश बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुईं. हालांकि उनकी पहली मुलाकात किसी फिल्मी रोमांस जैसी नहीं थी, बल्कि काफी मजेदार और हैरान कर देने वाली थी.

यह किस्सा 1993 में रिलीज हुई फिल्म 'बाजीगर' के सेट का है. उस समय शाहरुख खान इंडस्ट्री में नए थे और अपनी पहचान बनाने की कोशिश कर रहे थे, जबकि काजोल भी अपने करियर की शुरुआत कर रही थीं. शूटिंग के पहले दिन जब काजोल ने पहली बार शाहरुख को देखा तो उनकी पहली प्रतिक्रिया कुछ अलग ही थी. उन्होंने मजाक में कहा, 'ये कैसा अजीब सा हीरो है, इसे कहां से लाए हो. हालांकि शुरुआती मुलाकात में काजोल को शाहरुख का अंदाज थोड़ा अलग लगा, लेकिन शूटिंग के दौरान दोनों के बीच अच्छी दोस्ती हो गई. धीरे-धीरे दोनों की समझ और तालमेल इतना मजबूत हुआ कि कैमरे के सामने उनकी केमिस्ट्री बिल्कुल स्वाभाविक नजर आने लगी.

बाजीगर की सफलता के बाद दोनों ने 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'करण अर्जुन', 'कुछ कुछ होता है', 'कभी खुशी कभी गम', 'माय नेम इज खान' और 'दिलवाले' जैसी फिल्मों में साथ काम किया. हर फिल्म में उनकी जोड़ी को दर्शकों ने भरपूर प्यार दिया. रोमांस, भावनाएं और शानदार अभिनय का यह मेल उन्हें बॉलीवुड की सबसे सफल ऑन-स्क्रीन जोड़ियों में शामिल करता है. आज भी जब बॉलीवुड की सर्वश्रेष्ठ जोड़ियों का जिक्र होता है, तो शाहरुख खान और काजोल का नाम सबसे पहले लिया जाता है.

मॉरीशस में डीजे बने अर्जुन रामपाल

ड्रोन शो की झलक की साझा

बॉलीवुड अभिनेता अर्जुन रामपाल ने मॉरीशस यात्रा के दौरान डीजे कंसोल संभालते हुए अपने संगीत प्रेम का परिचय दिया. अर्जुन रामपाल ने इस खास मौके का वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया, जिसमें वह दर्शकों के लिए संगीत प्रस्तुत करते नजर आए. वीडियो में एक भव्य ड्रोन शो भी दिखाया गया है. अर्जुन ने पोस्ट में लिखा, 'मॉरीशस, आपने कल रात कमाल कर दिया. शानदार ऊर्जा और खूबसूरत ड्रोन शो के लिए धन्यवाद. यह मेरे लिए यादगार अनुभव रहा.

अर्जुन रामपाल का डीजे के रूप में प्रदर्शन कोई नया अनुभव नहीं है. वर्ष 2012 में उन्होंने दूसरे फॉर्मूला वन इंडियन ग्रां प्री की आधिकारिक आफ्टर पार्टी में पहली बार डीजे के रूप में प्रस्तुति दी थी. उस कार्यक्रम में उन्होंने ब्रिटिश इलेक्ट्रॉनिक संगीत निर्माता गैरेथ एमरी के साथ भी मंच साझा किया था. हाल ही में अर्जुन अमेरिका और कनाडा के 10 शहरों में आयोजित 'द रैम्पेज टूर' पूरा कर लौटे हैं, जहां उन्होंने बॉलीवुड, टेक्नो, हाउस और ग्लोबल क्लब म्यूजिक का मिश्रण पेश किया. अर्जुन हाल ही में 'धुरंधर' और 'धुरंधर: द रिवेंज' में आईएसआई मेजर इकबाल की भूमिका में नजर आए. वह जल्द ही अमेजन एमएक्स प्लेयर की आगामी सीरीज 'बिलियनेयर' में मुख्य भूमिका निभाते दिखाई देंगे. इस सीरीज का निर्माण हंसल मेहता और रॉबी ग्रेवाल कर रहे हैं.

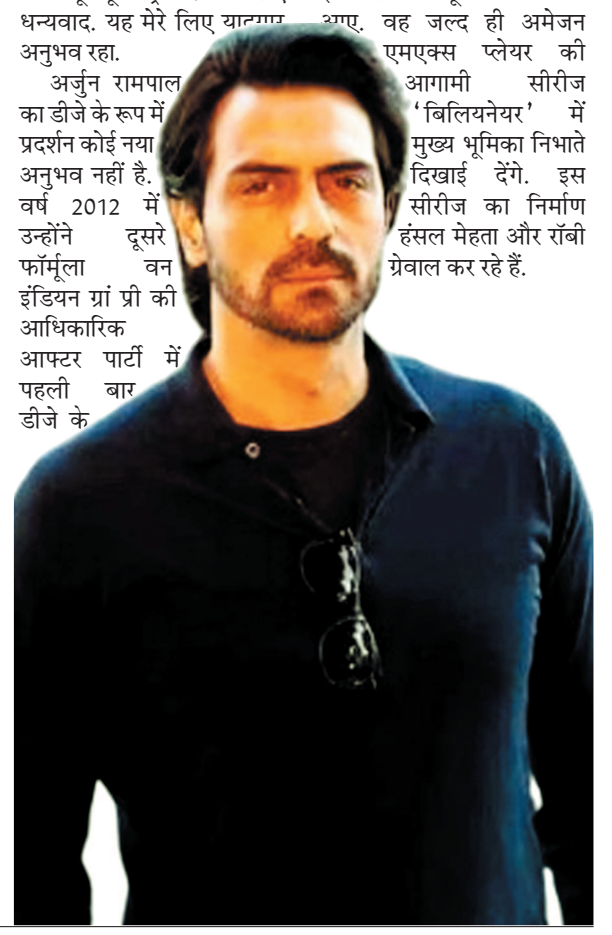

राहुल मोदी के साथ फिल्म देखने पहुंची श्रद्धा

अभिनेत्री श्रद्धा कपूर इन दिनों अपनी फिल्मों के साथ-साथ अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी सुर्खियों में बनी हुई हैं. इस बार चर्चा की वजह बनी है उनकी एक वायरल वीडियो, जिसमें वह कथित बॉयफ्रेंड राहुल मोदी के साथ फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' की स्क्रीनिंग में पहुंचती नजर आ रही हैं. दोनों को एक साथ देखकर सोशल मीडिया पर उनके रिश्ते को लेकर चर्चाएं फिर तेज हो गई हैं.हाल ही में रिलीज हुई अहमद खान निर्देशित मल्टीस्टारर फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' को दर्शकों का अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है. फिल्म देखने के लिए कई बॉलीवुड सितारे भी सिनेमाघरों में पहुंचे. इसी दौरान श्रद्धा कपूर और राहुल मोदी की मौजूदगी ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया. वायरल वीडियो में श्रद्धा और राहुल एक साथ थिएटर पहुंचते दिखाई देते हैं. दोनों का सादगी भरा अंदाज और कैमरों की मौजूदगी के बीच सहज व्यवहार सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया. वीडियो सामने आते ही फैंस ने तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं देनी शुरू कर दीं. कई यूजर्स का कहना है कि दोनों अब अपने रिश्ते को छिपाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, जबकि कुछ लोगों का मानना है कि यह सिर्फ अच्छे दोस्तों की मुलाकात भी हो सकती है.श्रद्धा कपूर और राहुल मोदी का नाम पिछले काफी समय से एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाता रहा है. दोनों को पहले भी कई मौकों पर साथ देखा गया है, लेकिन उन्होंने कभी भी अपने रिश्ते को लेकर खुलकर बात नहीं की.

फिल्म इक्का का दमदार ट्रेलर रिलीज

नेटफ्लिक्स की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'इक्का' का ट्रेलर रिलीज होने के साथ ही दर्शकों के बीच इसे लेकर उत्साह बढ़ गया है. यह फिल्म इसलिए भी खास मानी जा रही है क्योंकि इसमें पहली बार सनी देओल और अक्षय खन्ना एक साथ नजर आएंगे. दोनों कलाकार अपने दमदार अभिनय के लिए जाने जाते हैं और ट्रेलर में उनकी आमने-सामने की मौजूदगी फिल्म को और भी रोमांचक बनाती है.

फिल्म की कहानी एक ऐसे हाई-प्रोफाइल केस के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसमें हत्या के प्रयास का गंभीर आरोप लगा है. सनी देओल अर्जुन मेहरा नाम के एक ईमानदार और सिद्धांतवादी वकील की भूमिका निभा रहे हैं. उनका मानना है कि अदालत केवल मुकदमे जीतने की जगह नहीं, बल्कि न्याय दिलाने का मंच है.

पार्थ की सच्चाई से अनजान करण ने मांगा सबूत

क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में लीप के बाद कहानी लगातार नए मोड़ ले रही है. पार्थ और रियो की मौत ने विरानी परिवार की खुशियां छीन ली हैं. हालांकि परिवार के कुछ सदस्य इस दुखद घटना की सच्चाई जानते हैं, लेकिन करण अब भी अपने बेटे को निर्दोष मान रहे हैं.

तुलसी ने पार्थ की हत्या का दोष अपने ऊपर ले लिया है. उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि नंदिनी और परिवार के बाकी सदस्य किसी नई मुसीबत में न फंसें. जेल जाने से पहले तुलसी ने साफ कह दिया कि उनसे मिलने कोई न आए और यही मान लिया जाए कि उन्होंने ही पार्थ की जान ली है. दूसरी ओर करण इस पूरी घटना के लिए वैष्णवी को जिम्मेदार ठहराते हैं. उनका कहना है कि पार्थ ऐसा कदम कभी नहीं उठा सकता. जब परिवार के लोग कहते हैं कि पार्थ ने रियो की हत्या की थी, तो करण इस बात को मानने से इनकार कर देते हैं और बार-बार सबूत की मांग करते हैं. असलियत यह है कि रियो की हत्या के पीछे पार्थ का ही हाथ था, लेकिन इस सच्चाई से सिर्फ तुलसी, नंदिनी और वैष्णवी ही वाकिफ हैं.

कृषि जगत

फार्महाउस में कैसे उगाएं काजू

भारत दुनिया के प्रमुख काजू उत्पादक देशों में शामिल है. इसकी खेती मुख्य रूप से गोवा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और ओडिशा में की जाती है, लेकिन अब कई अन्य राज्यों में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा रही है.

काजू के पौधों के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है. लगभग 20 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान और अच्छी धूप इसके विकास के लिए अनुकूल रहती है. जलभराव वाली भूमि काजू के लिए नुकसानदायक होती है, इसलिए खेत या फार्महाउस की मिट्टी में पानी का निकास अच्छा होना चाहिए. दोमट, लाल या हल्की बलुई मिट्टी इसके लिए बेहतर मानी जाती है.

खेती शुरू करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय या अधिकृत नर्सरी से ग्राफ्टेड पौधे खरीदना बेहतर रहता है. इन पौधों में जल्दी फल लगते हैं और उत्पादन भी अधिक मिलता है. पौधों के बीच सामान्यत: 7 से 8 मीटर की दूरी रखी जाती है ताकि पेड़ों को पर्याप्त जगह और धूप मिल सके. शुरुआती दो से तीन वर्षों तक पौधों की नियमित सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण और जैविक खाद का उपयोग जरूरी होता है. इसके बाद पेड़ मजबूत हो जाते हैं और कम देखभाल में भी अच्छा उत्पादन देने लगते हैं. समय-समय पर शाखाओं की छंटाई और कीट-रोग नियंत्रण करने से उत्पादन बेहतर होता है.

जैविक तरीकों से फसल के कीट करें दूर

जैविक खेती का सबसे बड़ा उद्देश्य रसायनों पर निर्भरता कम करना और प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना है। फसलों में लगने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए कई ऐसे जैविक उपाय उपलब्ध हैं, जो प्रभावी होने के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित हैं. सबसे पहले किसानों को नियमित रूप से खेत का निरीक्षण करना चाहिए. यदि शुरुआती अवस्था में कीटों की पहचान हो जाए, तो उनका फैलाव आसानी से रोका जा सकता है. संक्रमित पत्तियों या पौधों को हटाकर नष्ट करना भी कीट नियंत्रण का सरल और प्रभावी तरीका है.

नीम आधारित घोल जैविक खेती में सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले उपायों में शामिल है. नीम के बीज या पत्तियों से तैयार घोल का छिड़काव कई प्रकार के रस चूसने वाले और पत्ती खाने वाले कीटों को नियंत्रित करने में मदद करता है. इसके अलावा लहसुन और हरी मिर्च का मिश्रण तैयार कर छिड़काव करने से भी कई कीट दूर रहते हैं. गोमूत्र आधारित जैविक घोल, जीवामृत और दशपर्णी अर्क का उपयोग भी किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है. ये घोल पौधों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ कई हानिकारक कीटों के प्रभाव को कम करने में सहायक होते हैं. हालांकि इनका प्रयोग स्थानीय कृषि विशेषज्ञों की सलाह और सही मात्रा के अनुसार करना चाहिए. कीट नियंत्रण के लिए पीले और नीले स्टिकी ट्रैप, फेरोमोन ट्रैप और प्रकाश प्रपंच भी उपयोगी साधन हैं. ये कीटों की संख्या कम करने के साथ उनकी निगरानी में भी मदद करते हैं. साथ ही खेत में लाभकारी कीटों, जैसे लेडीबर्ड बीटल और मकड़ियों का संरक्षण करना भी जरूरी है, क्योंकि ये प्राकृतिक रूप से कई हानिकारक कीटों का नियंत्रण करते हैं.

फसल चक्र अपनाना, संतुलित जैविक खाद का उपयोग करना और खेत की स्वच्छता बनाए रखना भी कीट प्रबंधन का महत्वपूर्ण हिस्सा है.

कौन सी मिट्टी है फसल के लिए सबसे उपजाऊ

भारत में मुख्य रूप से काली, लाल और पीली मिट्टी बड़े पैमाने पर पाई जाती है. इन तीनों प्रकार की मिट्टियों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं और अलग-अलग फसलों के लिए इनकी उपयोगिता भी अलग होती है. काली मिट्टी को आमतौर पर सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टियों में गिना जाता है. इसे रेगुर मिट्टी भी कहा जाता है. इसमें चिकनी मिट्टी की मात्रा अधिक होती है, जिससे इसकी जलधारण क्षमता काफी अच्छी होती है.

यही कारण है कि कम बारिश वाले क्षेत्रों में भी यह लंबे समय तक नमी बनाए रखती है. कपास, सोयाबीन, ज्वार, गेहूं, सूरजमुखी और दलहन जैसी फसलें काली मिट्टी में अच्छी पैदावार देती हैं. हालांकि, इसमें फॉस्फोरस और नाइट्रोजन की मात्रा अपेक्षाकृत कम हो सकती है, इसलिए संतुलित उर्वरकों का प्रयोग आवश्यक होता है.

लाल मिट्टी का रंग इसमें मौजूद लौह (आयरन) ऑक्साइड के कारण होता है. यह मिट्टी अच्छी जल निकासी वाली होती है, लेकिन इसमें जैविक पदार्थ और नमी अपेक्षाकृत कम होती है. उचित खाद और सिंचाई के साथ इसमें मूंगफली, बाजरा, अरहर, आलू और कई बागवानी फसलों की सफल खेती की जा सकती है. पीली मिट्टी भी लौह तत्व की उपस्थिति के कारण बनती है, लेकिन अधिक नमी और जल निकासी की स्थिति में इसका रंग पीला दिखाई देता है.

यदि सामान्य तुलना की जाए तो काली मिट्टी को अधिक उपजाऊ माना जाता है, क्योंकि इसमें नमी बनाए रखने की क्षमता अधिक होती है और यह कई महत्वपूर्ण फसलों के लिए अनुकूल रहती है. हालांकि, यह कहना सही नहीं होगा कि लाल या पीली मिट्टी खेती के लिए खराब होती है. सही पोषक तत्वों का प्रबंधन, मिट्टी परीक्षण और फसल के अनुसार उर्वरकों का उपयोग करके इन मिट्टियों में भी उत्कृष्ट उत्पादन लिया जा सकता है. इसलिए खेती शुरू करने से पहले मिट्टी परीक्षण कराना सबसे बेहतर कदम है.

बारिश में कैसे रखें दुधारू पशुओं का ध्यान

बरसात के मौसम में दुधारू पशुओं की देखभाल सामान्य दिनों की तुलना में अधिक सावधानी से करनी पड़ती है. सबसे पहले यह सुनिश्चित करें कि पशुओं का बाड़ा ऊंची जगह पर बना हो और वहां बारिश का पानी जमा न हो. अधिक नमी और कीचड़ बैक्टीरिया तथा परजीवियों के पनपने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करते हैं, जिससे पशुओं में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है.

बाड़े की नियमित सफाई करें और फर्श को यथासंभव सूखा रखें. यदि संभव हो तो सूखा बिछावन जैसे भूसा या सूखी घास बिछाएं और उसे समय-समय पर बदलते रहें. इससे पशुओं को आराम मिलता है और संक्रमण का जोखिम कम होता है. पशुओं को हमेशा स्वच्छ और ताजा चारा दें. फफूंद लगा, सड़ा-गला या अधिक गीला चारा खिलाने से बचें, क्योंकि इससे पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं. हरे चारे के साथ सूखा चारा और संतुलित पशु आहार देने से पोषण बेहतर बना रहता है. साथ ही, साफ और पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी हमेशा उपलब्ध होना चाहिए. दूध निकालने से पहले और बाद में थनों की अच्छी तरह सफाई करना बेहद जरूरी है. इससे मास्टाइटिस जैसी बीमारी का खतरा कम होता है. यदि थनों में सूजन, गर्माहट या दूध में बदलाव दिखाई दे तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें.

मानसून में मक्खी, मच्छर और अन्य परजीवी तेजी से बढ़ते हैं. इनके नियंत्रण के लिए बाड़े की नियमित सफाई करें और आवश्यकता अनुसार पशु चिकित्सक की सलाह से सुरक्षित परजीवी नियंत्रण उपाय अपनाएं. समय पर टीकाकरण और कृमिनाशक दवा भी पशुओं को कई गंभीर बीमारियों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. यदि पशु सुस्त दिखाई दे, बुखार हो, खाना कम खाए या दूध उत्पादन अचानक घट जाए, तो इसे नजरअंदाज न करें. ऐसे लक्षण बीमारी का संकेत हो सकते हैं और तुरंत विशेषज्ञ की सलाह लेना उचित रहता है. मानसून में थोड़ी अतिरिक्त सावधानी अपनाकर दुधारू पशुओं को स्वस्थ रखा जा सकता है. साफ-सुथरा बाड़ा, संतुलित आहार, नियमित स्वास्थ्य जांच और समय पर उपचार न केवल पशुओं की सेहत बनाए रखते हैं, बल्कि दूध उत्पादन और पशुपालकों की आय को भी स्थिर रखने में मदद करते हैं.